

लैन नश विषम दन न काणं श्रीरुगुल न नूत्रिः दह्या र्थ यरु पाधुधु पीनसं ग्रुपी किमि॥ कर्त्तरी मानद
 पु वलमग्नि कर्त्तयनी॥ तालीग वेंग प्राचन वृषक ॥ न न वरु वाच पातक शुक्र म्यात कर्ष ॥ धान मगच पिपली
 पुपुी सिपि उग नैरा जीनि कर्ष १ धान आगल वरु स खन वरु कि धीनस्य विषम दन काण अलमस्य गूल नूत्रि
 मद लैय उरुयाक पाधु प्राग द्वाग रु १ २ धाव ग्रुपी किमि काक कादव धत माच करी वल अग्निद यका॥ तालीग
 दि॥ ॥ साग नैच विको कारी पिपली सुल विरु की रुक्मा च याले कान् रागान द्युत पुके विपाचयं ॥ पुङ्ग वन न स पुके
 ममु पुके तथे वच उकाहिक द्याहिके व द्याहिके च उथेक ॥ न मानस चीने दान न दकि सुल च क नूत दग ॥ दूत्रमि
 धास काण द्यु वल वरु विव द्यनी॥ पुपुी सिपि सजि का न पिपली सुल विरु क पिपली पु १ धान राग रु न सा धन रु १
 खन पातु ति रु १ धन ति रु १ धत खून कि र्थ व वरु क रुक्मा नूत न व व न रुक्मा नूत न ख रुक्मा नूत न य रुक्मा नूत न चि क नाग
 गरी न द्वाग क धास काण माक वल वरु वृद्धि पाक ॥ अ मृग मद्यल क द्युत ॥ ॥ वासा पुपुी यले के च रुक्मा मं निव तस

से। मुक्ति के चविका वक्रि गज कस्तूर पत्ता हकी। ताली गायक का गीत ल वक्र कुटि वल्कल ॥ कंगल का नवी धाम्नी अ
 जाजी कर्म भवत। एत वृक्षी कर्म भवत युगै दिगुजित यं क। धारी प्रमाप गुटिका र क यं च यथा वत्त। वासिकान् य
 क्रिका छेव। (पुष्पिकान् सो विधासिकान्) विषम दान सर्वसु श्री दुर्गा थ युदा मय। काग प्रास नू विधापु युत्मा काग्यं क
 याय ह। अग्नि चक नूतं दीप्ति वल वधू क नातिव ॥ आदग युधि पिपत्ती मत्र च पु। धान पिपत्ता सुत सिधि चत
 कदा गज पिपत्ती कुष २ धान ताली गे पातक उगत्रहा लवक युक्त माल ल वद लोच लूयक गने रुक जीनि सा
 हल जीनि कर्म धान चूर्ण याय वाग्दकाया दूगन कि अमून अ वल याय धन कं मुठ विदा व नक वास पि क
 (पुष्प विदाय विषम दान आदिन अल्प मंद अर्ग प्राग काग प्रास नू विमद यापु प्राय युत्मा कय प्राय माक अ
 मिदयका वल वधू दयका ॥ वासादि गुटिका ॥ विषम दान विविक्ता ॥ ॥ वषसिमाने तादृष्ट ४ पि क पुष्पा विता क
 नी ॥ वषसि वात द्वाव काय ल यल पि क अरु स (पुष्प लिव वीद व वषा युजित्ता एद तास ॥ ॥ कथ्य लि कं च न